G-20 और बहुपक्षवाद की आवश्यकता

प्रिलिम्स के लिये:

G-20 अध्यक्षता, वि-वैश्वीकरण, कोविड-19, सूक्ष्म बहुपक्षीय समूह।

मेन्स के लिये:

G-20 और बहुपक्षवाद की आवश्यकता

चर्चा में क्यों?

भारत की G-20 अध्यक्षता बहुपक्षीय सुधार को अपनी शीर्ष अध्यक्षीय प्राथमिकताओं में से एक के रूप में रखती है क्योंकि भारत ने कहा है कि इसका एजेंडा **समावेशी, महत्त्वाकांक्षी, कार्रवाई-उन्मुख और निर्णायक** होगा।

- भारत ने यह भी कहा कि इसका प्राथमिक उद्देश्य महत्त्वपूर्ण विकास और सुरक्षा मुद्दों पर **वैश्विक सहमति बनाना** तथा समान वैश्विक वितरण करना है।

बहुपक्षवाद की आवश्यकता क्या है?

- लगातार गतिरोध के कारण बहुपक्षवाद ने **बहुमत का विश्वास खो दिया है।** बहुपक्षवाद एक **उपयोगिता संकट** का सामना कर रहा है, जहाँ शक्तिशाली सदस्य-राष्ट्र/राज्य को यह लगता है कि यह **अब उनके लिये उपयोगी नहीं है।**
- इसके अलावा **बढ़ती महाशक्तियों के बीच तनाव, डी-वैश्वीकरण, लोक-लुभावन राष्ट्रवाद, महामारी और जलवायु आपात स्थितियों** ने कठिनाइयों में इजाफा किया है।
- इस गतिरोध ने राज्यों को द्विपक्षीय, बहुपक्षीय और लघु पार्श्व समूहों सहित अन्य क्षेत्रों की तलाश करने के लिये प्रेरित किया, जिसने बाद में वैश्विक राजनीति के ध्रुवीकरण में योगदान दिया।
- हालाँकि सहयोग और बहुपक्षीय सुधार समय की आवश्यकता है। आज देश जिन चुनौतियों का सामना कर रहा है, उनमें से अधिकांश वैश्विक प्रकृति की हैं और उनके लिये **वैश्विक समाधान की आवश्यकता** है।
- वैश्विक मुद्दों जैसे- संघर्ष, जलवायु परिवर्तन, प्रवासन, व्यापक आर्थिक अस्थिरता और **साइबर सुरक्षा** को वास्तव में सामूहिक रूप से ही हल किया जा सकता है।
- इसके अलावा **कोविड-19 महामारी** जैसे व्यवधानों ने पिछले कुछ दशकों में वैश्विक समाज द्वारा की गई सामाजिक और आर्थिक प्रगति को उलट दिया है।

सुधार संबंधी चुनौतियाँ:

- **वैश्विक शक्ति की राजनीति:**
  - वैश्विक सत्ता की राजनीति में बहुपक्षवाद की गहरी पहुँच है। परिणामस्वरूप बहुपक्षीय संस्थानों और ढाँचे में सुधार की कोई भी कार्रवाई स्वचालित रूप से एक ऐसे कदम में बदल जाती है जो सत्ता के वर्तमान वितरण में बदलाव की मांग करती है।
  - वैश्विक **व्यवस्था में शक्ति के वितरण** में संशोधन **न तो आसान है और न ही सामान्य।** इसके अलावा **अगर सावधानी नहीं बरती गई तो इसके प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकते हैं।**
- **ज़ीरो-सम गेम की कल्पना:**
  - यथास्थितिवादी शक्तियाँ बहुपक्षीय सुधारों को एक ज़ीरो-सम गेम के रूप में मानती हैं। उदाहरण के लिये ब्रेटन वुड्स प्रणाली के संदर्भ में संयुक्त राज्य अमेरिका और यूरोप का मानना था कि **सुधार से उनका प्रभाव एवं प्रभुत्व कम हो जाएगा।**
  - इससे इन संगठनों में सुधार पर आम सहमति या मतदान करना मुश्किल हो जाता है।

- **वैश्वकि बहुपक्षीय आदेश:**
    - नवीन बहुपक्षीय वैश्वकि व्यवस्था के तथ्य **बहुपक्षवाद के वपिरीत प्रतीत** होते हैं।
    - नवीन आदेश **अधकि बहुध्रुवीय और ववििधि केंद्रीय प्रतीत** होते हैं।
    - ऐसी स्थतिसिमान वचिारधारा वाले **नए क्लबों, सांस्कृतकि कार्यक्रमों** के गठन की सुवधिा प्रदान करती है, जसिसे **पुराने संस्थानों और उनकी संरचनाओं में सुधार करना कठनि** हो जाता है।

भारतीय बहुपक्षवाद और जी-20:

- **सहभागति समूह का गठन :**
    - बहुपक्षीयवाद सुधार की कथा वर्तमान में **केवल कुछ राष्ट्रीय राजधानयिों और कुलीन हलकों में ही मौजूद है,** जो कविशिष रूप से उभरती शक्तयिों में रहती है।
    - इसलयि G-20 को पहले **बहुपक्षीय सुधारों के उचति आख्यान स्थापति करने पर ध्यान केंद्रति करना चाहयि।**
    - जी-20 वैश्वकि वमिर्श में इस कहानी को **ऊपर उठाने के लक्ष्य के साथ एक गठबंधन के रूप में कार्य कर सकता है।**
    - भारत को इस समूह के आगामी अध्यक्षों **ब्राज़ील और दक्षणि अफ्रीका को भी अपने राष्ट्रपतकिार्यकाल के दौरान बहुपक्षीय परविर्तनों को प्राथमकिता देने के लयि प्रोत्साहति करना चाहयि।** चूँकदिोनों की वैश्वकि उच्च-स्तरीय महत्त्वाकांक्षाएँ हैं, इसलयि यह भारत के लयि एक आसान काम होगा।
- **लघुपक्षवाद समूह को प्रोत्साहति करना:**
    - बहुपक्षीय सहयोग का समर्थन करते हुए G-20 को बहुपक्षवाद के एक नए रूप में लघुपक्षीय समूहों को प्रोत्साहति करना जारी रखना चाहयि।
    - मुद्दा-आधारति लघुपक्षवाद का नेटवर्क बनाना वशिष रूप से **वैश्वकि शासन से संबंधति क्षेत्रों में** प्रतस्पिर्द्धी गठबंधनों को रोकने में सहायक होगा जहाँ अन्य अभनिेता अपने लाभ हेतु कूटनीतकिरते हैं, जसिसे वशि्व व्यवस्था अधकि वभिाजति हो जाती है।
- **अधकि समावेशी:**
    - दक्षता के साथ समूह को अधकि समावेशी बनाने की आवश्यकता है। उदाहरण के लयि एक स्थायी सदस्य के रूप में **अफ्रीकी संघ और स्थायी आमंत्रतिों के रूप में संयुक्त राष्ट्र महासचवि एवं महासभा के अध्यक्ष** को शामलि करना **इसकी वैधता को बढ़ाने में सहायक होगा।**
    - इसी तरह भरोसे और उपयोगति के संकट का समाधान करने के लयि G-20 को एक या दो अहम वैश्वकि मुद्दों को हल करने हेतु सभी प्रयास करने चाहयि, साथ ही इसे नए बहुपक्षवाद के मॉडल के रूप में प्रदर्शति करना चाहयि।
        - खाद्य, ईंधन और उर्वरक सुरक्षा ऐसे मुद्दों हैं जो वैश्वकि राजनीतकिी 'नम्नि राजनीतकि के अंतर्गत आते हैं, जसिसे सहयोग करना अधकि व्यवहार्य हो जाता है।

[स्रोत: द हदिू]

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/g-20-and-need-for-multilateralism